Ancient Vedic Mantras and Rituals

Shri Hanuman Sathika | श्री हनुमान साठिका | PDF

Shri Hanuman Sathika

|| दोहा ||

वीर बखानौं पवनसुत,जनत सकल जहान ।
धन्य-धन्य अंजनि-तनय , संकर, हर, हनुमान्॥
अर्थ- वीर पवन पुत्र की कीर्ति का वर्णन करता हूँ जिन्हें सम्पूर्ण संसार जानता है। हे अंजनी पुत्र! (Sathika) हे भगवान शंकर के अवतार हनुमान जी ! आप धन्य हैं।

जय जय जय हनुमान अडंगी ।
महावीर विक्रम बजरंगी ॥
अर्थ- हे परम वीर हनुमान आपकी जय हो। आपकी गति अबाध्य है अर्थात जिसमें कोई भी किसी भी तरह की बाधा नहीं डाल सकता है तथा न कोई आपका मार्ग नहीं रोक सकता है । हे हनुमान आप वज्र के समान ही कठोर अंगों वाले महावीर हो, आपकी जय हो, आपकी जय हो ।

जय कपीश जय पवन कुमारा ।
जय जगबन्दन सील अगारा ॥
अर्थ- हे कपि श्रेष्ठ आप कपियों के राजा हैं | आपकी जय हो । हे पवनसुत ! आपकी जय हो । हे हनुमान आप सारे संसार के लिए वंदनीय हैं आप तो असंख्य गुणों के भंडार हैं | आपकी जय हो, आपकी जय हो ।

जय आदित्य अमर अबिकारी ।
अरि मरदन जय-जय गिरधारी ॥
अर्थ- हे कौशलपूर्ण तथा हर कला में निपुण देवता आप सभी प्रकार के विकारों से परे हैं । हे प्रभु आप शत्रुओं का नाश करने वाले हैं ! आपकी जय हो। हे हनुमान (Sathika) आपने अपने अतुलित बल द्वारा द्रोणाचल को उठाया था ! आपकी जय हो।

अंजनि उदर जन्म तुम लीन्हा ।
जय-जयकार देवतन कीन्हा ॥
अर्थ- हे हनुमान जब आपने माता अंजनी के गर्भ से जन्म लिया तब सभी देवताओं ने आपकी जय- जयकार की । आपकी जय हो ।

बाजे दुन्दुभि गगन गम्भीरा ।
सुर मन हर्ष असुर मन पीरा ॥
अर्थ- आकाश में हर्षो उल्लास का माहौल था नगाड़े बजे, देवताओं के मन हर्षित हुए तथा असुरों के मन में बहुत पीड़ा हुई।

कपि के डर गढ़ लंक सकानी ।
छूटे बंध देवतन जानी ॥
अर्थ- हे हनुमान (Sathika) आपके डर से लंका के किले में रहने वाले सभी राक्षस भयभीत हो गये । आपने सभी देवताओं को राक्षसों के कारागार से छुड़ाया।

ऋषि समूह निकट चलि आये ।
पवन तनय के पद सिर नाये ॥
अर्थ- हनुमान जी, ऋषियों के समूह आपके पास आए तथा सभी ने आपके चरणों में नतमस्तक हो गए | आपकी जय हो |

बार-बार अस्तुति करि नाना ।
निर्मल नाम धरा हनुमाना ॥
अर्थ- सभी ने अलग अलग तरह से बार-बार आपकी स्तुति की और आपका पावन नाम ' हनुमान् ' रखा गया |

सकल ऋषिन मिलि अस मत ठाना ।
दीन्ह बताय लाल फल खाना ॥
अर्थ- सभी ऋषियों ने सर्वसम्मति से हे हनुमान जी आपको लाल रंग का फल खाने की प्रेरणा दी |

सुनत बचन कपि मन हर्षाना ।
रवि रथ उदय लाल फल जाना ॥
अर्थ- हे हनुमान (Sathika) जी लाल रंग का फल का नाम सुनकर आप बहुत खुश हुए और सूर्य को ही लाल फल समझ लिया |

रथ समेत कपि कीन्ह अहारा ।
सूर्य बिना भए अति अंधियारा ॥
अर्थ- तब हे हनुमान जी आपने सूर्य को रथ सहित पकड़ कर मुँह में रख लिया। तब सभी जगह बहुत अधिक भय छा गया और सृष्टि में हाहाकार मच गया।

विनय तुम्हार करै अकुलाना ।
तब कपीस की अस्तुति ठाना ॥
अर्थ- सूर्य के बिना पूरी सृष्टि का जीवन संकट में आ गया तब सभी देवता तथा मुनि व्याकुल होकर हे पवनसुत आपकी स्तुति करने लगे |

सकल लोक वृतान्त सुनावा ।
चतुरानन तब रवि उगिलावा ॥
अर्थ- सारे संसार की ऐसी दशा सुनकर ब्रह्मा जी ने सूर्य को मुक्त करने के लिए हे पवनसुत आपको मना लिया ।

कहा बहोरि सुनहु बलसीला ।
रामचन्द्र करिहैं बहु लीला ॥
अर्थ- उस समय आपसे विनती की, हे महावीर, हे हनुमान; सुनिये भगवान श्री रामचंद्र जी आने वाले समय में महान लीलाएं करेंगे |

तब तुम उन्हकर करेहू सहाई ।
अबहिं बसहु कानन में जाई ॥
अर्थ- तब हनुमान जी से श्री राम प्रभु की सहायता करने के लिए कहा गया। हे महावीर अभी आप वन में जाकर कुछ समय वहां रहिये।

असकहि विधि निजलोक सिधारा ।
मिले सखा संग पवन कुमारा ॥
अर्थ- यह कहकर ब्रह्माजी अपने लोक को चले गए और हनुमान जी आप अपने सखाओं से मिल गए |

खेलैं खेल महा तरु तोरैं ।
ढेर करैं बहु पर्वत फोरैं ॥
अर्थ- हे हनुमान जी आपने खेल-खेल में बड़े – बड़े वृक्ष गिरा डाले और बहुत से पर्वतों को फोड़ – फोड़ कर ढेर कर दिया।

जेहि गिरि चरण देहि कपि धाई ।
गिरि समेत पातालहिं जाई ॥
अर्थ- हे हनुमान जी (Sathika) आपकी शक्ति अपरंपार है आपने जिस भी पर्वत पर अपने चरण रखे वह पाताल में समा गया।

कपि सुग्रीव बालि की त्रासा ।
निरखति रहे राम मगु आसा ॥
अर्थ- सुग्रीव जी अपने बड़े भाई बाली से बहुत डरे हुए थे। परन्तु उन्हें श्री रामचंद्र जी के आने की आस थी जिसने उन्हें निर्भय रखा हुआ था ।

मिले राम तहं पवन कुमारा ।
अति आनन्द सप्रेम दुलारा ॥
अर्थ- हे पवनसुत आपने लाकर उन्हें श्री रामचंद्र जी से मिला दिया तब आपको बहुत ही प्रेम तथा आनंद मिला|

मनि मुंदरी रघुपति सों पाई ।
सीता खोज चले सिरु नाई ॥
अर्थ- हे महावीर ! आपको श्री राम जी से मणि जड़ित अंगूठी मिली जिसे लेकर आप सीता माता की खोज करने निकल गए ।

सतयोजन जलनिधि विस्तारा ।
अगम अपार देवतन हारा ॥
अर्थ- हे हनुमान जी ! अब आपके सामने सौ योजन का विशाल समुद्र था जिसे देवता और मुनि भी पार करने में असमर्थ थे|

जिमि सर गोखुर सरिस कपीसा ।
लांघि गये कपि कहि जगदीशा ॥
अर्थ- हे महावीर आपने उस समुद्र को 'जय श्री राम' कहकर बिना किसी थकन के सहज ही गऊ के खुर के समान लाँघ लिया ।

सीता चरण सीस तिन्ह नाये ।
अजर अमर के आसिस पाये ॥
अर्थ- लंका में सीता माता के पास पहुंचकर आपने उनकी चरण वंदना की जिस पर सीता जी ने आपको अजर अमर होने का आशीर्वाद दिया|

रहे दनुज उपवन रखवारी ।
एक से एक महाभट भारी ॥
अर्थ- वहां लंका नगरी में एक से एक महाभयंकर राक्षस, राक्षस वाटिका की रखवाली करते थे।

तिन्हैं मारि पुनि कहेउ कपीसा ।
दहेउ लंक कोप्यो भुज बीसा ॥
अर्थ- आपने उन महा भयंकर राक्षसों का संहार कर दिया था तथा उस उपवन को भी नष्ट करके, लंका नगरी को जला डाला जिससे लंकापति रावण भी भयभीत होकर काँप उठा ।

सिया बोध दै पुनि फिर आये ।
रामचन्द्र के पद सिर नाये।
अर्थ- फिर आपने सीता जी को धीरज दिया और वापस लौट कर श्री रामचंद्र जी के चरणों में सिर नवाया ।

मेरु उपारि आप छिन माहीं ।
बांधे सेतु निमिष इक मांहीं ॥
अर्थ- लंका नगरी पर सारी सेना को ले जाने के लिए अपने बड़े – बड़े पर्वतों को लाकर आपने पलभर में समुद्र पर पुल बंधवाया |

लछमन शक्ति लागी उर जबहीं ।
राम बुलाय कहा पुनि तबहीं ॥
अर्थ- युद्ध के दौरान जब जब श्री राम के भाई श्री लक्ष्मण जी को शक्ति लगी उस समय श्री रामचंद्र ने बहुत विलाप किया।

भवन समेत सुषेन लै आये ।
तुरत सजीवन को पुनि धाये ॥

अर्थ- उस मुश्किल समय में हे महावीर आप लंका के सुषेन वैद्य को उनके भवन समेत ही उठा लाए और जब लक्ष्मण जी के प्राण बचाने के लिए संजीवनी बूटी की जरूरत पड़ी तो आप उसे बड़े वेग से लेने गए।

मग महं कालनेमि कहं मारा ।
अमित सुभट निसिचर संहारा ॥
अर्थ- बूटी लेने जाते समय रास्ते में आपने कालनेमि को मारा और असंख्य योद्धा तथा निशाचर जिस किसी ने भी आपका रास्ता रोकने की कोशिश की उन्हें आपने नष्ट कर दिया |

आनि संजीवन गिरि समेता ।
धरि दीन्हों जहं कृपा निकेता ॥
अर्थ- अंत में आपने पर्वत सहित संजीवनी को लाकर करुणा (Sathika) निधान श्री राम के पास रख दिया |

फनपति केर सोक हरि लीन्हा ।
वर्षि सुमन सुर जय जय कीन्हा ॥
अर्थ- इस प्रकार आपने लक्ष्मण जी के संकट को दूर किया और देवताओं ने मिलकर आप पर पुष्प-वर्षा करके आपकी जय-जयकार की।

अहिरावण हरि अनुज समेता ।
लै गयो तहां पाताल निकेता ॥
अर्थ- उसके उपरांत जब अहिरावण श्री राम तथा लक्ष्मण को पाताल में ले गया ।

जहां रहे देवि अस्थाना ।
दीन चहै बलि काढ़ि कृपाना ॥
अर्थ- वहाँ देवी के स्थान पर श्री राम तथा लक्ष्मण जी की बलि देने के लिए उसने तलवार निकाल ली।

पवनतनय प्रभु कीन गुहारी ।
कटक समेत निसाचर मारी ॥
अर्थ- उसी समय हे परम प्रतापी महावीर, आपने वहाँ पहुँच कर उस राक्षस को ललकारा और उसे उसकी पूरी सेना समेत मार डाला |

रीछ कीसपति सबै बहोरी ।
राम लषन कीने यक ठोरी ॥
अर्थ- तत्पश्चात आप हनुमान जी जहां पर जामवंत और सुग्रीव थे, वहाँ आप श्रीराम तथा लक्ष्मण को लौटा लाए।

सब देवतन की बन्दि छुड़ाये ।
सो कीरति मुनि नारद गाये ॥
अर्थ- आपने सब देवताओं को राक्षसों के बंधन से मुक्त कर दिया और नारद मुनि ने आपका यशगान किया |

अछयकुमार दनुज बलवाना ।
कालकेतु कहं सब जग जाना ॥
अर्थ- अक्षय कुमार राक्षस एक बहुत ही बलवान राक्षस था। जिसे केतु के नाम से यह सारा संसार जानता है।

कुम्भकरण रावण का भाई ।
ताहि निपात कीन्ह कपिराई ॥
अर्थ- रावण का एक भाई कुंभकरण भी था । हे वानर राज ! आपने ही इन सभी राक्षसों का विनाश किया |

मेघनाद पर शक्ति मारा ।
पवन तनय तब सो बरियारा ॥
अर्थ- हे हनुमान जी (Sathika) आपने युद्ध में रावण के भाई मेघनाथ को भी पछाड़ा है । हे पवन कुमार ! आपके समान और कौन बलवान है ?

रहा तनय नारान्तक जाना ।
पल में हते ताहि हनुमाना ॥
अर्थ- मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाले नरान्तक नाम के राक्षस जो की रावण का पुत्र था हे हनुमान जी उसे भी आपने क्षण भर में परास्त कर दिया ।

जहं लगि भान दनुज कर पावा ।
पवन तनय सब मारि नसावा।
अर्थ- जहाँ – जहाँ भी आपने राक्षसों को पाया, हे शिव अवतार ! आपने संहार कर दिया ।

जय मारुत सुत जय अनुकूला ।
नाम कृसानु सोक सम तूला ॥
अर्थ- हे मारुती सुत ! आपकी जय हो । (Sathika) आप सेवकों के हर कार्य को सिद्ध करने में सहायक हुए हो । उनके शोक रूपी रूई को जलाने में आपका नाम अग्नि के समान है |

जहं जीवन के संकट होई ।
रवि तम सम सो संकट खोई ॥
अर्थ- जिस किसी के भी जीवन में किसी भी प्रकार का कोई भी संकट हो, आप उसे पल भर में ही दूर कर देते हैं जैसे कितना भी घना अँधेरा हो सूर्य उसे पल भर में समाप्त कर देता है ।

बन्दि परै सुमिरै हनुमाना ।
संकट कटै धरै जो ध्याना ॥
अर्थ- हे हनुमान जी ! बंदी होने पर जो आपका स्मरण करता है उसकी रक्षा करने के लिये आप गदा और चक्र लेकर उसे कारगर से मुक्त कराने पहुंच जाते हो ।

जाको बांध बामपद दीन्हा ।
मारुत सुत व्याकुल बहु कीन्हा ॥
अर्थ- हे वीर हनुमान (Sathika) आप तो यमराज को भी ऊपर दिशा में फेंक देते हैं तथा मृत्यु की भी बुरी दशा करते हो ।

सो भुजबल का कीन कृपाला ।
अच्छत तुम्हें मोर यह हाला ॥
अर्थ- हे कृपा के सागर ! आपकी सभी शक्तियां कहाँ गयी जो आपके रहते मेरी यह दशा हो रही है |

आरत हरन नाम हनुमाना ।
सादर सुरपति कीन बखाना ॥
अर्थ- हे हनुमान जी ! (Sathika) आपका नाम संकटमोचन है। स्वयं सरस्वती माता और देवराज इंद्र ने ऐसा वर्णन किया है |

संकट रहै न एक रती को ।
ध्यान धरै हनुमान जती को ॥
अर्थ- जो भी व्यक्ति हनुमान जी आपका ध्यान करता है उसके जीवन में एक रत्ती के बराबर भी संकट नहीं रह सकता।

धावहु देखि दीनता मोरी ।
कहौं पवनसुत जुगकर जोरी ॥
अर्थ- हे कृपा निधान कृपा कर आप मेरी दीनता देखकर अति तीव्र गति से आइये और मुझे इन बंधनों से मुक्त कर दीजिए। मैं आपसे हाथ जोड़कर विनती करता हूँ।

कपिपति बेगि अनुग्रह करहु ।
आतुर आइ दुसै दुख हरहु ॥
अर्थ- हे हनुमान जी ! (Sathika) आप मुझ पर शीघ्र अपनी कृपा बरसाए। मेरा दुःख दूर करने के लिए आप उतावले होकर आइये |

राम सपथ मैं तुमहिं सुनाया ।
जवन गुहार लाग सिय जाया ॥
अर्थ- हे महावीर ! यदि आप मेरी पुकार सुनकर न आए तो मैं आप को श्री राम की शपथ देता हूं ।

यश तुम्हार सकल जग जाना ।
भव बन्धन भंजन हनुमाना ॥
अर्थ- हे पवनसुत आपका यश सारा संसार जानता है | हे हनुमान जी, आप संसार में बार-बार जन्म लेने के भय को भी दूर कर देते हैं |

यह बन्धन कर केतिक बाता ।
नाम तुम्हार जगत सुखदाता ॥
अर्थ- प्रभु फिर मेरा तो यह बंधन उसके आगे कुछ भी नहीं है | आपको जगत में सभी सुख देने वाला सुखदाता भी कहते हैं |

करौ कृपा जय जय जग स्वामी ।
बार अनेक नमामि नमामी ॥
अर्थ- हे जग के स्वामी ! आपकी जय हो (Sathika) । आप मुझ दीन पर कृपा कीजिये। मैं अनेक बार आपको नमस्कार करता हूँ |

भौमवार कर होम विधाना ।
धूप दीप नैवेद्य सुजाना ॥
अर्थ- जो भी भक्त मंगलवार को विधि पूर्वक हवन करें तथा धूप – दीप और नैवेद्य समर्पित करता है |

मंगल दायक को लौ लावे ।
सुन नर मुनि वांछित फल पावे ॥
अर्थ- और इसके साथ ही साथ मंगलकारी श्री हनुमान जी में ध्यान लगाता, वह चाहे देवता हो या मनुष्य या मुनि हो, तुरंत ही उसका फल पाता है ।

जयति जयति जय जय जग स्वामी ।
समरथ पुरुष सुअन्तरजामी ॥
अर्थ- हे जगत के स्वामी ! आपकी जय हो, जय हो, जय हो, जय हो ! हे हनुमान जी ! आप समर्थ विश्वात्मा सभी के मन की बात जानने वाले हो |

अंजनि तनय नाम हनुमाना ।
सो तुलसी के प्राण समाना ॥
अर्थ- अंजनी सुत होने के कारण आपका नाम आंजनेय है । आप तुलसी के कृपा-निधान हैं |

|| दोहा ||

जय कपीस सुग्रीव तुम, जय अंगद हनुमान ।
राम लषन सीता सहित, सदा करो कल्याण ॥
अर्थ- सुग्रीव जी की जय, अंगद जी की जय , हनुमान जी की जय, श्री राम लक्ष्मण जी, सीता जी सहित सदा हमारा कल्याण कीजिए ।

बन्दौं हनुमत नाम यह, भौमवार परमान ।
ध्यान धरै नर निश्चय, पावै पद कल्याण ॥
अर्थ- मंगलवार के दिन (Sathika) को प्रमाण मानकर हनुमान जी का यह पाठ जो भी करता है और यदि वह मनुष्य निश्चय करके ध्यान करे तो अवश्य ही कल्याणकारी परम पद को प्राप्त करता है।
जो नित पढ़ै यह साठिका, तुलसी कहैं बिचारि ।
रहै न संकट ताहि को, साक्षी हैं त्रिपुरारि ॥

अर्थ- तुलसीदास की यह घोषणा है कि जो इस हनुमान साठिका का नित्य पाठ करेगा वह कभी संकट में नहीं पड़ेगा। स्वयं शिव जी इसके साक्षी हैं।

|| सवैया ||

आरत बन पुकारत हौं कपिनाथ सुनो विनती मम भारी ।
अंगद औ नल-नील महाबलि देव सदा बल की बलिहारी ॥
जाम्बवन्त् सुग्रीव पवन-सुत दिबिद मयंद महा भटभारी ।
दुःख दोष हरो तुलसी जन-को श्री द्वादश बीरन की बलिहारी ॥

अर्थ- श्री तुलसीदास जी कहते हैं – हे हनुमानजी ! मैं भारी विपत्ति में आपको पुकार रहा हूँ। आप मेरी प्रार्थना सुनिये । अंगद, नल, नील, महादेव, राजा बलि, भगवान राम (देव) बलराम, शूरवीर जांबवंत, सुग्रीव, पवन पुत्र हनुमान, द्विद और मयन्द – इन बारह वीरों को मैं बलिहारी (न्यौछावर) हूँ | कृपा कर भक्त के दुःख और दोष को दूर कीजिये।

|| पंचमुखी हनुमान जी (panchmukhi hanuman ji) की जय ||

Related Articles

विजया एकादशी

महाशिवरात्रि व्रत एवं पूजा विधि

THANKS FOR READING

READ MORE RELIGIOUS CONTENT ON

vedicprayers.com

VEDIC PRAYERS

Follow us on: